

न्याय के प्रमाण और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति : एक तर्कनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० दिव्याबेन डी० पटेल

संस्कृत विभाग, श्री एण्ड श्रीमती पी. के. कोटवाला आर्ट्स कोलेज, पाटण भूमिका

doi.org/10.64643/IJIRTV12I8-191057-459

मानव सभ्यता का विकास ज्ञान की खोज के साथ जुड़ा हुआ है। मनुष्य प्रारंभ से ही यह जानना चाहता रहा है कि सत्य क्या है, ज्ञान कैसे प्राप्त होता है और किसी ज्ञान को सत्य या असत्य कैसे माना जाए। यही प्रश्न दर्शन और विज्ञान-दोनों के मूल में स्थित हैं। भारतीय दर्शन की परंपरा में इन प्रश्नों का सुव्यवस्थित उत्तर न्याय दर्शन देता है जबकि आधुनिक युग में इन्हीं प्रश्नों का व्यावहारिक समाधान आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से खोजा जाता है।

न्याय दर्शन भारतीय दार्शनिक परंपरा की वह शाखा है जो तर्क, विवेक और प्रमाण के आधार पर सत्य ज्ञान की स्थापना करती है। दूसरी ओर आधुनिक विज्ञान निरीक्षण, परिकल्पना, प्रयोग, सत्यापन और सिद्धांत-निर्माण की क्रमबद्ध प्रक्रिया द्वारा ज्ञान को प्रमाणित करता है। यद्यपि न्याय दर्शन और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति अलग-अलग ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों में विकसित हुई हैं, फिर भी दोनों का उद्देश्य एक ही है—सत्य और प्रामाणिक ज्ञान की प्राप्ति।

यहाँ न्याय दर्शन में प्रतिपादित प्रमाण-सिद्धांत और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के बीच एक तर्कनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिससे यह स्पष्ट हो सके की भारतीय तर्क परंपरा आधुनिक वैज्ञानिक चिंतन के दार्शनिक आधार को किस प्रकार सुदृढ़ करती है।

I. न्याय दर्शन

भारतीय दर्शन की आस्तिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जिसे तर्क और विवेक का दर्शन कहा जाता है। इसके प्रवर्तक गौतममुनि द्वारा रचित न्यायसूत्र में ज्ञान, तर्क, प्रमाण और यथार्थ का सुव्यवस्थित विश्लेषण मिलता है। न्याय दर्शन का उद्देश्य केवल बौद्धिक तर्क-वितर्क नहीं, बल्कि यथार्थ ज्ञान के माध्यम से अज्ञान और दुःख की निवृत्ति करना है। इसके अनुसार अज्ञान ही समस्त दुःखों का मूल कारण है और सत्य ज्ञान से ही मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। न्याय दर्शन यह स्पष्ट करता है कि प्रत्येक अनुभूति ज्ञान नहीं होती, इन्द्रियाँ भ्रम कर सकती हैं और मन संशयग्रस्त हो सकता है। इसलिए किसी भी ज्ञान को स्वीकार करने से पहले उसका प्रमाण-सिद्ध होना आवश्यक है। इसी कारण प्रमाणमीमांसा को इसमें विशेष महत्व दिया गया है। इन्द्रियानुभव की जाँच, तर्कसंगत निष्कर्ष और विश्वसनीय स्रोत से प्राप्त ज्ञान—ये सभी न्याय दर्शन की मान्य कसौटियाँ हैं। दार्शनिक दृष्टि से न्याय दर्शन यथार्थवादी है, जो बाह्य जगत् को मन से स्वतंत्र और वास्तविक मानता है। यही दृष्टिकोण इसे आधुनिक विज्ञान के अत्यंत निकट लाता है और भारतीय दर्शन की सबसे वैज्ञानिक प्रवृत्तिवाली प्रणाली के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

II. न्याय दर्शन में प्रमाणों की अवधारणा

भारतीय दर्शन में न्याय दर्शन को तर्क और विवेक का दर्शन माना गया है। इसका मुख्य उद्देश्य सत्य ज्ञान की प्राप्ति द्वारा अज्ञान और दुःख की निवृत्ति करना है। न्याय दर्शन यह स्पष्ट रूप से मानता है कि कोई भी ज्ञान तभी स्वीकार्य हो सकता है जब वह प्रमाण-सिद्ध हो। इसी कारण न्याय दर्शन में प्रमाणों की अवधारणा को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाण वह साधन है, जिसके द्वारा यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होता है। न्याय दर्शन केवल ज्ञान की चर्चा नहीं करता बल्कि कि ज्ञान की सत्यता की जाँच कैसे की जाए। यही इसे एक वैज्ञानिक और आलोचनात्मक दर्शन बनाता है।

न्याय दर्शन चार प्रमाण स्वीकार करता है— प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। ये चारों प्रमाण ज्ञान को परखने की कसौटी हैं।

प्रत्यक्ष प्रमाण

इन्द्रियों और उनके विषय के संपर्क से उत्पन्न ज्ञान है। यह ज्ञान तत्काल और प्रत्यक्ष होता है। उदाहरण के लिए आँखों से अग्नि को देखना या कानों से ध्वनि सुनना। न्याय दर्शन प्रत्यक्ष को सबसे मूलभूत प्रमाण मानता है क्योंकि अन्य सभी प्रमाण किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष पर ही आधारित होते हैं।

अनुमान प्रमाण

वह ज्ञान है जो ज्ञात तथ्य के आधार पर अज्ञात तथ्य का बोध कराता है। इसका आधार कारण-कार्य संबंध और व्याप्ति है। जैसे—जहाँ धुआँ है वहाँ आग है, पर्वत पर धुआँ है अतः पर्वत पर आग है। अनुमान में प्रयुक्त पंचावयवी तर्क (प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन) तर्क की शुद्धता सुनिश्चित करता है।

उपमान प्रमाण

समानता के आधार पर ज्ञान उत्पन्न करता है। जब किसी अज्ञात वस्तु को किसी ज्ञात वस्तु के समान बताकर पहचाना जाता है तब उपमान प्रमाण कार्य करता है। यह प्रमाण भाषा-अधिगम और संज्ञानात्मक प्रक्रिया में सहायक है।

शब्द प्रमाण

विश्वसनीय और आप्त स्रोत से प्राप्त ज्ञान को स्वीकार करता है। शास्त्र, विद्वानों के कथन और विश्वसनीय ग्रंथ इसके अंतर्गत आते हैं। न्याय दर्शन यह स्पष्ट करता है कि हर कथन शब्द प्रमाण नहीं होता केवल वही कथन प्रमाण है जो प्रामाणिक स्रोत से प्राप्त हो। इस प्रकार न्याय दर्शन में प्रमाणों की अवधारणा ज्ञान को अंधविश्वास से मुक्त करती है और उसे तर्कपूर्ण, व्यवस्थित तथा सत्यापित बनाती है। यही कारण है कि न्याय दर्शन को भारतीय ज्ञानमीमांसा की वैज्ञानिक आधारशिला कहा जाता है।

III. आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति का स्वरूप और प्रक्रिया

आधुनिक युग में ज्ञान प्राप्ति का सबसे प्रभावशाली साधन आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति मानी जाती है। यह पद्धति केवल विज्ञान तक सीमित नहीं है बल्कि आज समाज-विज्ञान, चिकित्सा, पर्यावरण अध्ययन और तकनीकी अनुसंधान में भी स्वीकार किया है। वैज्ञानिक पद्धति का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि ज्ञान वस्तुनिष्ठ, परीक्षणयोग्य और सत्यापन-योग्य हो। आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति का स्वरूप क्रमबद्ध और तर्कसंगत है। यह ज्ञान को अनुमान या विश्वास के आधार पर स्वीकार नहीं करती बल्कि उसे प्रयोग और परीक्षण की कसौटी पर परखती है।

वैज्ञानिक पद्धति में पहले निरीक्षण (हेमंत अंजपवद) है। इसमें किसी घटना या समस्या को ध्यानपूर्वक देखा जाता है। निरीक्षण से ही शोध-प्रश्न उत्पन्न होता है। यह चरण न्याय दर्शन के प्रत्यक्ष प्रमाण के समान है।

| परिकल्पना (भलचवजीमेपेद्ध का निर्माण है। परिकल्पना निरीक्षण के आधार पर प्रस्तुत एक तार्किक अनुमान होती है जिसे आगे जाँचा जाना होता है। यह न्याय दर्शन के अनुमान प्रमाण से साम्य रखती है। प्रयोग (माचमतपउमदजंजपवदद्ध है। इसमें नियंत्रित परिस्थितियों में परिकल्पना की जाँच की जाती है। प्रयोग का उद्देश्य यह देखना होता है कि परिकल्पना सत्य है या नहीं। सत्यापन (टमतपपिबंजपवदद्ध है। प्रयोगों से प्राप्त परिणामों की पुनरावृत्ति की जाती है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि परिणाम संयोगवश नहीं हैं। सिद्धांत-निर्माण (जिमवतल थ्यतउनसंजपवदद्ध है। जब किसी निष्कर्ष की बार-बार पुष्टि हो जाती है तब उसे सामान्यीकृत करके सिद्धांत का रूप दिया जाता है। आधुनिक विज्ञान-दर्शन में ज्ञातस व्यचचमत ने खंडनीयता (थसेपिंइपसपजलद्ध का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार कोई भी वैज्ञानिक सिद्धांत तभी वैज्ञानिक कहलाता है जब उसे गलत सिद्ध किया जा सके। यह विचार वैज्ञानिक ज्ञान को स्थिर नहीं बल्कि निरंतर परीक्षण-योग्य बनाता है।

इस प्रकार आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति ज्ञान को अनुभव तर्क और परीक्षण के माध्यम से प्रमाणित करती है। यह पद्धति न्याय दर्शन की प्रमाण-परंपरा से गहरी समानता रखती है क्योंकि दोनों ही बिना प्रमाण किसी ज्ञान को स्वीकार नहीं करते। न्याय दर्शन में प्रमाणों की अवधारणा और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति-दोनों का लक्ष्य एक ही है: सत्य और विश्वसनीय ज्ञान की स्थापना। न्याय दर्शन जहाँ तर्क और प्रमाण की दार्शनिक संरचना प्रदान करता है वहीं आधुनिक विज्ञान उसी संरचना को प्रयोगात्मक रूप में लागू करता है। इसीलिए कहा जा सकता है कि भारतीय न्याय दर्शन आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति का दार्शनिक पूर्वगामी है।

IV. न्याय के प्रमाण और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति

तुलनात्मक अध्ययन

मानव ज्ञान की खोज में यह प्रश्न सदैव केंद्रीय रहा है कि किसी ज्ञान को सत्य और विश्वसनीय कैसे माना जाए। इस प्रश्न का सुव्यवस्थित उत्तर न्याय दर्शन देता है जबकि आधुनिक युग में यही कार्य वैज्ञानिक पद्धति करती है। यद्यपि दोनों प्रणालियाँ अलग-अलग सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों में विकसित हुई हैं फिर भी उनके मूल सिद्धांतों में गहरी समानता दिखे तो; न्याय दर्शन के प्रमाण और आधुनिक विज्ञान की पद्धति-दोनों का उद्देश्य अप्रमाणिक विश्वास के स्थान पर प्रमाण-सिद्ध ज्ञान की स्थापना करना है। आधुनिक विज्ञान भी किसी भी सिद्धांत को स्वीकार करने से पूर्व निरीक्षण प्रयोग और सत्यापन की प्रक्रिया अपनाता है। इस प्रकार दोनों प्रणालियाँ एक-दूसरे की पूरक प्रतीत होती हैं।

प्रत्यक्ष और निरीक्षण

न्याय दर्शन का प्रत्यक्ष प्रमाण वह ज्ञान है, जो इन्द्रियों और विषय के संपर्क से उत्पन्न होता है। यह प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित होता है। न्याय दर्शन प्रत्यक्ष को सबसे मूलभूत प्रमाण मानता है क्योंकि अन्य सभी प्रमाण किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष पर ही निर्भर होते हैं। आधुनिक विज्ञान में यही भूमिका निरीक्षण (ह्यमतअंजपवदद्ध निभाता है। विज्ञान किसी भी शोध की शुरुआत निरीक्षण से करता है। प्रयोगशाला में उपकरणों के माध्यम से किया गया निरीक्षण भी वस्तुतः प्रत्यक्ष का ही विस्तृत रूप है। इस प्रकार प्रत्यक्ष और निरीक्षण-दोनों ज्ञान की प्रथम सीढ़ी हैं।

अनुमान और परिकल्पना/निष्कर्ष

न्याय दर्शन का अनुमान प्रमाण ज्ञात तथ्यों के आधार पर अज्ञात का बोध कराता है। यह कारण-कार्य संबंध और व्याप्ति पर आधारित होता है। जैसे-धुएँ को

देखकर आग का अनुमान।आधुनिक विज्ञान में इसी प्रक्रिया को परिकल्पना (भलचवजीमेपेद्ध और निष्कर्ष (ब्यदबसनेपवदद्ध के रूप में देखा जाता है। वैज्ञानिक निरीक्षण के आधार पर एक परिकल्पना प्रस्तुत करता है जिसे प्रयोगों द्वारा जाँचा जाता है। जब प्रयोगों से परिकल्पना की पुष्टि होती है तब निष्कर्ष निकाला जाता है। इस प्रकार अनुमान और परिकल्पना-दोनों तार्किक निष्कर्ष की प्रक्रियाएँ हैं।

उपमान और मॉडल/एनालॉजी

न्याय दर्शन का उपमान प्रमाण समानता के आधार पर ज्ञान प्रदान करता है। किसी अज्ञात वस्तु को किसी ज्ञात वस्तु के समान बताकर समझाया जाता है। यह प्रमाण भाषा-अधिगम और संज्ञान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।आधुनिक विज्ञान में मॉडल (डवकमसद्ध और एनालॉजी (।दंसवहलद्ध इसी सिद्धांत पर आधारित हैं। उदाहरण के लिए परमाणु का सौरमंडल मॉडल-एक उपमानात्मक व्याख्या है। इससे स्पष्ट होता है कि उपमान केवल दार्शनिक अवधारणा नहीं बल्कि वैज्ञानिक व्याख्या का भी एक महत्वपूर्ण साधन है।

शब्द और प्रामाणिक शोध

न्याय दर्शन में शब्द प्रमाण का अर्थ है-विश्वसनीय और आप्त स्रोत से प्राप्त ज्ञान। शास्त्र विद्वानों के कथन और प्रामाणिक ग्रंथ इसके अंतर्गत आते हैं। न्याय दर्शन यह स्पष्ट करता है कि केवल वही कथन शब्द प्रमाण कहलाता है जो विश्वसनीय स्रोत से आया हो। आधुनिक विज्ञान में यही भूमिका प्रामाणिक शोध (चमत्.तमअपमूमक त्सेमंतबीद्ध निभाता है। वैज्ञानिक जर्नलों में प्रकाशित शोध-पत्र मान्य पुस्तकों और विशेषज्ञों के निष्कर्ष-आधुनिक शब्द प्रमाण के समान हैं। विज्ञान भी किसी सिद्धांत को तभी स्वीकार करता है जब वह प्रामाणिक शोध द्वारा समर्थित हो।

व्याप्ति और कारण-कार्य संबंध

न्याय दर्शन में व्याप्ति का अर्थ है-कारण और कार्य के बीच का सार्वभौमिक संबंध। जैसे-जहाँ-जहाँ धुआँ है वहाँ-वहाँ आग है। अनुमान की वैधता व्याप्ति पर ही निर्भर करती है।

आधुनिक विज्ञान में यही सिद्धांत कारण-कार्य संबंध (बेमदृमिबज त्संजपवदीपचद्ध के रूप में प्रयुक्त होता है। विज्ञान नियमों और सिद्धांतों को इसी आधार पर स्थापित करता है। इस प्रकार व्याप्ति और कारण-कार्य संबंध दोनों ही वैज्ञानिक और दार्शनिक तर्क की शीढ़ हैं।

हेत्वाभास और तार्किक त्रुटियाँ

न्याय दर्शन केवल सही तर्क की स्थापना ही नहीं करता बल्कि गलत तर्क अर्थात् हेत्वाभास की भी स्पष्ट पहचान करता है। हेत्वाभास वह तर्क है जो देखने में सही लगता है किंतु वास्तव में दोषपूर्ण होता है। इससे ज्ञान भ्रमित हो सकता है इसलिए न्याय दर्शन ऐसे दोषों का निराकरण करता है। आधुनिक विज्ञान में इन्हें तार्किक त्रुटियाँ कहा जाता है जहाँ गलत प्रयोग त्रुटिपूर्ण आँकड़े या पूर्वाग्रही निष्कर्ष अस्वीकार्य होते हैं। इस प्रकार न्याय दर्शन की प्रमाण-पद्धति और आधुनिक वैज्ञानिक विधि दोनों का उद्देश्य ज्ञान को अधिक विश्वसनीय वस्तुनिष्ठ और मानव-कल्याणकारी बनाना है।

V. न्याय दर्शन और आधुनिक विज्ञान में तर्क

न्याय दर्शन सामान्यतः तर्क और विवेक का दर्शन कहा जाता है। इसका उद्देश्य सत्य ज्ञान की प्राप्ति है और सत्य ज्ञान तभी संभव है जब विचार तार्किक रूप से प्रमाणित हों। न्याय दर्शन यह स्वीकार करता है कि बिना तर्क के कोई भी ज्ञान या प्रमाण स्वीकार्य नहीं हो सकता। न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और शब्द-इन सभी प्रमाणों की आधारशिला तर्क है। विशेषतः अनुमान प्रमाण पूर्णरूप तार्किक प्रक्रिया पर

आधारित होता है जिसमें कारण-कार्य संबंध व्याप्ति और पंचावयवी तर्क की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि इस तर्क-प्रक्रिया में कोई दोष उत्पन्न हो जाए तो उसे हेत्वाभास कहते हैं और ऐसा ज्ञान स्वीकार्य नहीं। अतः न्याय दर्शन में तर्क मात्र सहायक साधन नहीं बल्कि ज्ञान की सत्यता निर्धारित करने वाला निर्णायक तत्व है।

आधुनिक विज्ञान में तर्क ज्ञान की वैधता की मूल कसौटी है। वैज्ञानिक पद्धति के सभी चरण-निरीक्षण परिकल्पना प्रयोग विश्लेषण और निष्कर्ष-तर्क पर ही आधारित होते हैं। तर्क के अभाव में प्रयोग दिशाहीन तथा निष्कर्ष अविश्वसनीय हो जाते हैं इसलिए तार्किक त्रुटि वाले शोध को वैज्ञानिक समुदाय अस्वीकार करता है। तर्क दर्शन और विज्ञान के बीच सेतु का कार्य करता है-दर्शन तर्क के सिद्धांत देता है और विज्ञान उन्हें प्रयोग द्वारा सत्यापित करता है। भारतीय परंपरा विशेषतः न्याय दर्शन तर्क को जीवनोपयोगी साधन मानकर ज्ञान को विश्वसनीय और सार्वभौमिक बनाती है। अतः यह स्पष्ट है कि तर्क न्याय दर्शन और आधुनिक विज्ञान-दोनों की आत्मा है। न्याय दर्शन में बिना तर्क के कोई प्रमाण मान्य नहीं और आधुनिक विज्ञान में बिना तार्किक पद्धति के कोई प्रयोग स्वीकार्य नहीं। तर्क ही वह साझा आधार है जो दर्शन को गहराई और विज्ञान को दृढ़ता प्रदान करता है। तर्क वह सेतु है जिसके माध्यम से दर्शन का विवेक और विज्ञान का प्रयोग एक-दूसरे से जुड़कर सत्य ज्ञान की खोज को संभव बनाते हैं।

ज्ञानमीमांसा : विज्ञान और दर्शन

ज्ञानमीमांसा विज्ञान और दर्शन के बीच एक सशक्त सेतु के रूप में कार्य करती है। दर्शन का कार्य ज्ञान की परिभाषा उसकी सीमाएँ और सत्यता की कसौटी निर्धारित करना है जबकि विज्ञान इन्हीं कसौटियों को प्रयोग निरीक्षण और सत्यापन के माध्यम से व्यवहार

में लागू करता है। दर्शन यह स्पष्ट करता है कि प्रत्येक अनुभूति या विचार ज्ञान नहीं होता क्योंकि भ्रम संशय और अंधविश्वास भी मानवीय अनुभव का हिस्सा हैं। ज्ञानमीमांसा ज्ञान और अज्ञान के बीच यह भेद स्थापित करती है और ज्ञान को प्रमाण-सिद्ध बनाने पर बल देती है।

भारतीय दर्शन में न्याय दर्शन ने ज्ञानमीमांसा को अत्यंत व्यवस्थित रूप प्रदान किया है। प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और शब्द-इन चार प्रमाणों के माध्यम से वह यह सिद्ध करता है कि बिना प्रमाण कोई भी ज्ञान स्वीकार्य नहीं हो सकता। यही सिद्धांत आधुनिक विज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति में भी दिखाई देता है जहाँ प्रयोग से असिद्ध सिद्धांतों को संशोधित या अस्वीकार कर दिया जाता है। इस प्रकार न्याय दर्शन की प्रमाणमीमांसा और आधुनिक विज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति का उद्देश्य समान है-ज्ञान को अंधविश्वास से मुक्त करना और उसे तर्कसंगत व विश्वसनीय बनाना।

आलोचनात्मक विवेचन से यह भी स्पष्ट होता है कि दोनों की अपनी-अपनी सीमाएँ हैं। न्याय दर्शन तर्क और अनुभव पर आधारित होते हुए भी आधुनिक विज्ञान जैसी सूक्ष्म प्रयोगात्मक तकनीकों का उपयोग नहीं करता जबकि आधुनिक विज्ञान अत्यधिक प्रयोगात्मक होने के बावजूद नैतिक और मूल्यगत प्रश्नों पर मौन रहता है। इसलिए दोनों का परस्पर पूरक होना आवश्यक है। समकालीन संदर्भ में जब समाज अप्रमाणिक सूचनाओं तकनीकी चुनौतियों और नैतिक दुविधाओं से घिरा है तब न्याय दर्शन का “प्रमाण-सिद्ध ज्ञान” का सिद्धांत और आधुनिक विज्ञान की प्रयोगात्मक दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। निष्कर्षतः ज्ञानमीमांसा दर्शन और विज्ञान के समन्वय की आधारभूमि है जो ज्ञान को न केवल शक्तिशाली बल्कि सत्य विवेकपूर्ण और मानव-कल्याणकारी बनाती है।

VI. निष्कर्ष

न्याय दर्शन के प्रमाण-सिद्धांत और आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति का मूल उद्देश्य एक ही है—सत्य विश्वसनीय और प्रमाणित ज्ञान की स्थापना। यद्यपि दोनों परंपराएँ भिन्न ऐतिहासिक सांस्कृतिक और बौद्धिक संदर्भों में विकसित हुई हैं फिर भी उनके आधारभूत सिद्धांतों में गहरी समानता दिखाई देती है। न्याय दर्शन यह मानता है कि कोई भी ज्ञान तब तक स्वीकार्य नहीं हो सकता जब तक वह प्रमाण-सिद्ध न हो। प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और शब्द—ये चार प्रमाण ज्ञान की सत्यता की कसौटी हैं। इसी प्रकार आधुनिक विज्ञान भी निरीक्षण परिकल्पना प्रयोग सत्यापन और सिद्धांत-निर्माण की प्रक्रिया द्वारा ज्ञान को स्वीकार करता है। दोनों ही प्रणालियाँ अंधविश्वास अप्रामाणिक धारणाओं और पूर्वाग्रहों का खंडन करती हैं। इस तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि न्याय दर्शन का प्रत्यक्ष प्रमाण आधुनिक विज्ञान के निरीक्षण से अनुमान प्रमाण परिकल्पना और निष्कर्ष से उपमान प्रमाण वैज्ञानिक मॉडल और एनालॉजी से तथा शब्द प्रमाण प्रामाणिक शोध और विशेषज्ञ मत से साम्य रखता है। इसके अतिरिक्त व्याप्ति और कारण-कार्य संबंध न्याय दर्शन और विज्ञान—दोनों में तर्क की रीढ़ हैं। तर्क न्याय दर्शन और आधुनिक विज्ञान—दोनों का साझा आधार है। न्याय दर्शन में बिना तर्क के कोई प्रमाण मान्य नहीं और आधुनिक विज्ञान में बिना तार्किक पद्धति के कोई प्रयोग स्वीकार्य नहीं। इसी प्रकार हेत्वाभास और तार्किक त्रुटियों की पहचान दोनों परंपराओं में ज्ञान को दोषमुक्त बनाने का कार्य करती है। आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो न्याय दर्शन की सीमा प्रयोगात्मक तकनीकों की कमी है जबकि आधुनिक विज्ञान की सीमा नैतिक और मूल्यगत प्रश्नों पर मौन रहना है। इसलिए समकालीन युग में दोनों का समन्वय अत्यंत आवश्यक है।

न्याय दर्शन आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति का दार्शनिक पूर्वगामी है और ज्ञानमीमांसा विज्ञान व दर्शन के बीच सेतु बनकर मानव ज्ञान को अधिक संतुलित विवेकपूर्ण और मानव-कल्याणकारी बनाती है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विवेचन के अनुसार न्याय दर्शन भारतीय दर्शन में ज्ञानमीमांसा और प्रमाणमीमांसा का सबसे सुव्यवस्थित रूप प्रस्तुत करता है। यह दर्शन ज्ञान को तर्क अनुभव और प्रमाण की कसौटी पर परखता है तथा उसे यथार्थ और विश्वसनीय बनाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि न्याय दर्शन भारतीय ज्ञानमीमांसा की वैज्ञानिक आत्मा है।

संदर्भ सूची:

- [1] अन्नम्भट्ट. *तर्कसंग्रह* (हिन्दी टीका सहित). वाराणसी: चौखम्बा।
- [2] गौतम. *न्यायसूत्र* (हिन्दी भाष्य). वाराणसी: चौखम्बा।
- [3] शुक्ल याज्ञवल्क्य. *भारतीय ज्ञानमीमांसा* दिल्ली: भारतीय विद्या प्रकाशन।
- [4] कुमार प्रभात. *आधुनिक विज्ञान दर्शन* दिल्ली: ग्रंथशिल्पी।
- [5] डॉ. राधाकृष्ण सर्वपल्ली -भारतीय दर्शन -वाराणसी :चौखम्बा प्रकाशन
- [6] केदारनाथ तिवारी -भारतीय तर्कशास्त्र परिचय - मोतीलाल बनारसीदास पब्लिश प्राइवेट लिमिटेड - 2016
- [7] ज्ञानसच्चिदानंद . जैम स्वहपब विबपमदजपपिब क्पेबवअमतलण स्वदकवदरु त्वनजसमकहम ;2002